नागौर : परिचय व जैव विविधता

- नागौर जिला ऐतिहासिक रूप से काफी महत्वपूर्ण है। नागौर बलबन की जागीर थी जिसे शेरशाह सूरी ने सन् 1542 में छीन लिया था। महान मुगल सम्राट अकबर ने यहाँ मस्जिद का निर्माण करवाया था। इस मस्जिद में मोईनुद्दीन चिश्ती के शिष्य की मज़ार भी है। नागौर विशेष रूप से प्रत्येक वर्ष लगने वाले पशु मेले के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। यहाँ के बैलो की नागौरी नसल विश्व प्रसिद्ध है। इस मेले में हर साल काफी संख्या में पर्यटक आते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ कई महत्वपूर्ण मंदिर और स्मारक भी हैं। ख़ींवसर किला, कुचामन किला, अचित्रगढ़ किला, हमीउद्दीन नागौरी मकबरा भी काफी प्रसिद्ध है।
- नागौर जिला राजस्थान में 26°.25' से 27°.40' उत्तरी अक्षांश और 73°.10' से 75°.15' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुछ भौगोलिक क्षेत्रफल 17,718 वर्ग किमी. है। इसमें से 250.92 वर्ग किमी. वन भूमि है। जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का 1.3 प्रतिशत है, औसतन तापक्रम 0.2° से 47° से. व जिले की औसत वर्षा लगभग 361.6 मिमी. है।
- नागौर जिले की वनस्पति यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों एवं जलवायु के अनुरूप अत्यन्त विरल एवं परिभ्रांषित अवस्था में है। यहाँ के वन ''ड्राई ट्रोपिकल फोरेस्ट तथा ट्रोपिकल थोर्न फोरेस्ट'' की श्रेणी में आते हैं एवं औसत घनत्व 0.4 से कम है। रोहिड़ा, खेजड़ी, जाल, कुमठा, गूगल एवं देसी बबूल प्रमुख वृक्ष प्रजातियाँ हैं। कैर, झाड़ी बेर, सणियाँ, खींप, बुई एवं फोग की झाड़ियाँ लगभग सभी जगह पायी जाती हैं। नागौर जिले में संकटापन्न वृक्ष प्रजाति ''इन्द्रोक'' भी पायी जाती हैं। जैव विविधता की दृष्टि से यहाँ 40 प्रजाति के पेड़, 28 प्रजाति के छोटे वृक्ष, छोटी झाड़ियाँ व शाक प्रजाति के 23, 7 प्रकार की लताएं एवं 7 प्रकार की घास प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- जिले में स्तनधारी वर्ग के 20 ; पक्षी वर्ग के 38 ; सरीसृप वर्ग के 14 व उभयचारीवर्ग के 2 वन्यजीव पाये जाते हैं।
- बाजरा, गेहूं, ज्वार, तिल, जौ और मूँग-मोठ नागौर जिले की प्रमुख फसलें हैं। जिले के अन्य फसलों में तारामीरा, सरसों, चना और मिर्च हैं। खरीफ फसलों में बाजरा, ज्वार, उड़द, मूंग, चौला, मूंगफली, अलसी और मिर्च शामिल हैं। यहाँ की मैथी ''नागौरी मैथी'' विश्व प्रसिद्ध है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की आबादी 33,07,743 है। जिसमें से 1696325 पुरुष एवं 1611418 स्त्रियाँ हैं।
- पशुधन बाड़मेर जिले की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। पशुधन गणना 2007 के अनुसार जिले में भेड़ - 795595, भैंस एवं भैंसे - 460324, बकरियां - 1420605, गाय बैल - 418134, ऊंट - 14091 हैं।
- हरित राजस्थान कार्यक्रम, राजस्थान वानिकी एवं जैव-विविधता परियोजना, एवं मनरेगा परियोजना जैव विविधता संरक्षण प्रदान करने हेतु चलाई जा रही हैं।
- जिले के खादी एवं ग्रामोद्योग, रस्सी, चमड़े की वस्तुओं का निर्माण, कपड़ा निर्माण, ऊनी कालीन, साबुन, फर्नीचर आदि जैविक अव्यवों पर आधारित है।

बोर्ड की गतिविधियाँ

(जैव विविधता अधिनियम, 2002 की धारा 22 के प्रावधानानुसार, राजस्थान सरकार द्वारा राज्यादेश क्रमांक प.4(8) वन/2005/पार्ट-I जयपुर, दिनांक 14 सितम्बर, 2010 से राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड की स्थापना की गई।)

❊ अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह का आयोजन

❊ जैव विविधता विषयक सामग्री का प्रकाशन

❊ कार्यशाला, प्रशिक्षण शिविर, इको-क्लब/बी.एम.सी. सदस्यों का भ्रमण आयोजन

❊ जैव विविधता प्रबंध समितियों का गठन व लोक जैव विविधता पंजिका तैयार करना

❊ जैविक संसाधनों का संरक्षण
❊ जैव विविधता विरासतीय स्थलों का चयन एवं अधिसूचित
❊ जैव सम्पदा के व्यवसायिक उपयोग का स्टेटस सर्वे
❊ प्रोत्साहन वर्धन

माता भूमिः पुत्रोऽह पृथिव्याः

भूमि माता है, समस्त जीव इसके अवयव हैं, हम पृथ्वी पुत्र हैं।
इसका संरक्षण, संवर्धन व सतत् उपयोग करना हमारी कर्तव्य परायणता है।

जैव विविधता : नागौर

राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड

7, द्धारिकापुरी, जमना लाल बजाज मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर

जैव विविधता

पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवन के पृथक-पृथक रूप ही जैव विविधता है। समृद्ध जैव विविधता बहुत कुछ प्रदान करती है, यथा भोजन, औषधियाँ, वस्त्र, आवास, आमोद-प्रमोद के साधन, सांस्कृतिक, शोध के अवसर, उद्योगों के लिये कच्चा माल और बहुत कुछ।

नागौर की समृद्ध जैव विविधता

आवास

औषधियाँ

उद्योग के लिए कच्चा माल

भोज्य पदार्थ

सांस्कृतिक

आमोद-प्रमोद

सब कुछ देती जैव विविधता। सतत् उपयोग से बनी रहेगी समरसता।।
अत: जैव विविधता संरक्षण हेतु हम आज ही शपथ लेवें।

जैव विविधता पर बढ़ते संकट

* आनुवंशिक विविधता में कमी व निम्नीकरण

लुप्त प्रजाति

प्रजाति में होता क्षरण

* आवास विखंडन

* प्राकृतिक संसाधनों का अति उपभोग

* विदेशी प्रजातियों का प्रसार

* जलवायु परिवर्तन

* मरुस्थलीय प्रसार

* भूउपयोग परिवर्तन

* विकास परियोजना का प्रभाव

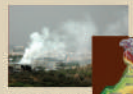

70% भूभाग का जैव विविधता सर्वेक्षण ही हुआ है 46000 पादप व 89000 जन्य प्रजातियों का पता लगा है, लगभग 4 लाख प्रजातियां हैं।

* प्राकृतिक आपदा

* जैव विविधता सूचना का अभाव

आओ हम सब, हमारे व आने वाली पीढियों के लिये,
जैव विविधता का संरक्षण, संवर्धन व सतत उपयोग करें।

जैव विविधता संरक्षण व सुधार के उपाय

स्थानिक प्रजातियों को बढ़ावा देना

विदेशी प्रजातियों का उन्मूलन

जैविक खाद व कीटनाशक का प्रयोग

जैविक संघटकों का सतत उपयोग

अक्षय ऊर्जा का उपयोग

वन्य जीवों का संरक्षण

वनों का संरक्षण

जैव विविधता सूचना का प्रत्येक स्तर पर संकलन करना

अब भी समय है, हम हमारी जैव विविधता को संकट मुक्त कर
आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करें।